क्रान्ति का महत्व एवं प्रभाव
(SIGNIFICANCE AND EFFECTS)

1688 ई. की वैभवपूर्ण क्रान्ति का इंग्लैण्ड के इतिहास में अत्यन्त महत्व है। इस क्रान्ति के परिणामस्वरूप 1603 ई. अथवा उससे भी पूर्व से चले आ रहे संसद एवं राजा के मध्य संघर्ष समाप्त हो गया। **इस क्रान्ति ने उन समस्त सिद्धान्तों को स्पष्ट कर दिया जिनके कारण यह संघर्ष चल रहा था, जिसके कारण गृहयुद्ध हुआ व इंग्लैण्ड को अपार संकटों एवं कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।** संसद एवं राजा के मध्य संघर्ष के प्रमुख सिद्धान्त अथवा कारण निम्न थे—राजा तथा संसद में किसके अधिकार सर्वोपरि हैं, इंग्लैण्ड के चर्च का स्वरूप क्या है, राज्यमन्त्री राजा के प्रति उत्तरदायी हैं अथवा संसद के, नागरिक स्वाधीनता की रक्षा, अधिनियम बनाना तथा कर लगाने का अधिकार किसको है, देश की वैदेशिक तथा गृह-नीति किसकी इच्छानुसार होनी चाहिए। उपर्युक्त कारणों का उत्तर इस क्रान्ति ने दे दिया।

इस क्रान्ति ने स्पष्ट कर दिया कि राजा के दैवी अधिकारों (Divine Rights) **को स्वीकार नहीं किया जा सकता।** वह ईश्वर के प्रति नहीं वरन् जनता की प्रतिनिधि संसद के प्रति उत्तरदायी है। जनता की शक्ति सर्वोपरि है, अतः राजा को प्रचलित नियमों में परिवर्तन करने का अधिकार नहीं है। **राजा की वास्तविक शक्ति संसद के सहयोग पर ही निर्भर है।** राजमन्त्रियों के उत्तरदायित्व के सम्बन्ध में भी यह स्पष्ट हो गया कि वे संसद के प्रति ही उत्तरदायी हैं। राजा के क्षमा करने से वे संसद के प्रति उत्तरदायित्व से मुक्त नहीं हो सकते। इस क्रान्ति ने यह भी स्पष्ट किया कि नागरिक स्वतन्त्रता की रक्षा करना, कानून बनाना तथा कर लगाना संसद के अधिकारों के अन्तर्गत है, राजा इसमें किसी प्रकार हस्तक्षेप नहीं कर सकता। राज्य की गृह एवं वैदेशिक नीति का निर्धारण भी राजा स्वेच्छा से नहीं अपितु संसद के परामर्श से करेगा। **धार्मिक क्षेत्र में भी स्पष्ट हो गया कि इंग्लैण्ड का वास्तविक धर्म एंग्लिकन अथवा प्रोटेस्टेण्ट है।** चर्च पर से राजा के अधिकार को समाप्त किया गया तथा संसद को चर्च का उत्तरदायित्व सौंपा गया। यह भी निश्चित किया गया कि कोई कैथोलिक व्यक्ति अथवा जिसका विवाह कैथोलिक से हुआ हो, इंग्लैण्ड की राजगद्दी पर आसीन नहीं हो सकता था। **इस प्रकार कैथोलिकों के खतरे को सदैव के लिए इंग्लैण्ड से समाप्त कर दिया गया तथा प्रोटेस्टेण्ट धर्म इंग्लैण्ड में सदैव के लिए स्थापित हो गया।** इस प्रकार इंग्लैण्ड के इतिहास में वैभवपूर्ण क्रान्ति का अत्यन्त महत्व है क्योंकि इसने राजाओं की निरंकुशता व स्वेच्छाचारिता के स्थान पर वास्तविक संसदीय प्रणाली की स्थापना की। इस प्रकार सांविधानिक दृष्टिकोण से न केवल इंग्लैण्ड पर अपितु सम्पूर्ण विश्व पर इसका प्रभाव पड़ा। इस क्रान्ति के कारण ही इंग्लैण्ड में सहिष्णुता की भावना अधिक दृढ़ हुई तथा प्रेस पर से प्रतिबन्ध हटा लिया गया। न्याय विभाग तथा कार्यकारिणी पृथक्-पृथक् किए गए तथा एक लोकप्रिय सरकार की स्थापना हुई जैसा कि रैम्जे म्योर ने लिखा है, **'इस स्मरणीय तथा नवीन युग-निर्मात्री घटना से इंग्लैण्ड में लोकप्रिय सरकार का युग प्रारम्भ हुआ तथा सत्ता निरंकुश राजाओं के हाथ से निकलकर संसद के हाथ में आ गयी।'**[1]

वैभवपूर्ण क्रान्ति का प्रभाव न केवल इंग्लैण्ड पर अपितु सम्पूर्ण यूरोप पर हुआ।[2] इंग्लैण्ड तथा हॉलैण्ड में पिछले अनेक दशकों से व्यापारिक प्रतिस्पर्धा के कारण शत्रुता चल रही थी। डेन्बी ने यद्यपि मित्रता स्थापित करने का प्रयत्न किया, किन्तु यह मित्रता अधिक समय तक स्थिर न रह सकी थी। **इस क्रान्ति के परिणामस्वरूप इंग्लैण्ड एवं हॉलैण्ड का राजा एक ही व्यक्ति होने के कारण दोनों देशों में स्थायी मित्रता स्थापित हुई।** फ्रांस का हॉलैण्ड पर अधिकार करने का प्रयत्न अब उसके लिए एक स्वप्न मात्र रह गया।

इंग्लैण्ड की यद्यपि हॉलैण्ड से मित्रता स्थापित हुई, किन्तु उसके फ्रांस के साथ सम्बन्ध तनावपूर्ण हो गए। चार्ल्स द्वितीय तथा जेम्स द्वितीय के समय में इंग्लैण्ड तथा फ्रांस के सम्बन्ध अत्यन्त मधुर थे क्योंकि ये दोनों ही शासक कैथोलिक थे तथा लुई चौदहवें से अत्यधिक प्रभावित थे। **वैभवपूर्ण क्रान्ति के कारण इंग्लैण्ड में प्रोटेस्टेण्ट-शासन की स्थापना तथा हॉलैण्ड एवं फ्रांस के सम्बन्ध कटु होने से इंग्लैण्ड एवं फ्रांस में शत्रुता हो गयी।** इंग्लैण्ड एवं

1 'From thi

Scanned with CamScanner